संवाद

# एक 'अनोखी' दास्तान

**मनोरमा दीवान**

**यदि मुझे अपने** जीवन को केवल तीन शब्दों में बयान करने के लिये कहा जाये तो मेरा उत्तर होगा 'अनोखा'।

जन्म लेते ही कानों में जो पहले शब्द सुनाई दिये वे थे इंक्लाब-ज़िन्दाबाद। माता-पिता दोनों स्वतन्त्रता सेनानी थे। हमारा परिवार लाहौर (पंजाब) के प्रसिद्ध लाजपत राय भवन में रहता था जिसे 'क्रान्तिकारियों की बस्ती' - आज़ादी का गढ़ कहा जा सकता था।

पिता प्रिंसीपल छबीलदास स्वतन्त्रता आन्दोलन में असहयोग आन्दोलन के दौरान स्थापित नेशलन कॉलेज के प्रिंसिपल रहे थे। शहीद भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु तथा अन्य बहुत से क्रान्तिकारी उनके छात्र थे।

मेरा बचपन राजनैतिक सभाओं में अपने माता-पिता के साथ जाने, सुबह की प्रभात फेरियों में हिस्सा लेने तथा आज़ादी के गाने गाने और नाटक खेलने में गुज़रा था।

मैंने उन स्थानों को भी देखा था जहां भगतसिंह पढ़ते थे और जहां उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियां हुई थीं।

9 अगस्त 1942 के दिन गांधी जी द्वारा चलाये आन्दोलन 'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो' में मेरे माता-पिता एक साथ गिरफ्तार हुये। उस समय मैं छः वर्ष की थी। अपनी बहनों और छोटे भाई के साथ हमने हंसते हुए उत्साह से *इंक्लाब ज़िन्दाबाद, भारत माता की जय* और *आज़ाद करेंगे हिन्द तुम्हें* के नारे लगाते हुये उन्हें जेल रवाना किया था।

मेरी माता, सीता देवी भी एक स्वतन्त्रता सेनानी थीं। लाहौर की महिला सेन्ट्रल जेल में मुझे उनके साथ रहने का अवसर मिला। 9 अगस्त 1943 के दिन मां तथा अन्य स्वतन्त्रता सेनानी महिलाओं को मैंने ब्रिटिश जेल पर तिरंगा झन्डा लहराते हुए देखा।

स्वतंत्रता संग्राम के इसी जोशीले माहौल में मैं पली-बढ़ी। ज़ाहिर है कि देशभक्ति की भावना मेरी रगों में दौड़ती थी।

1947 में भारत का विभाजन हुआ और हमारा परिवार लाहौर से भारत आ गया।

1957 में पत्रकार-लेखक बीरेन्द्रनाथ दीवान जो उर्दू में ज़फ़र पयायी के नाम से लिखते थे से मेरी शादी हुई। इस शादी पर वर-वधू दोनों की तरफ़ से कुल तेईस रुपये खर्च हुए थे। न बैन्ड-बाजा, बारात और न ही दहेज लेन-देन किया गया।

मेरे पत्रकार जीवन की शुरुआत पश्चिम एशियाई देशों की लम्बी यात्राओं के दौरान हुई। पाकिस्तान, ईराक, ईरान, सीरिया, मिस्र आदि देशों की सभ्यता और रहन-सहन को करीब से देखने पर एहसास हुआ कि पर्दे में रहने वाली औरतों का जीवन कितना कठिन और बोझिल होता है।

फिलस्तीनी शरणार्थियों के कैम्पों में काम करते हुए उन इंसानों की परेशानी को करीब से महसूस किया जो अपना घर छोड़ने पर मजबूर हुये थे। इनमें बड़ी संख्या महिलाओं की थीं।

सन 1970 में मेरे पति और मैंने भारतीय पत्रकारिता मे एक नया परीक्षण किया। हमने एक बहुभाषीय न्यूज़ फ़ीचर एजेंसी की शुरुआत की। प्रेस एशिया इंटरनेशनल फ़ीचर एजेंसी के माध्यम से हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू, पंजाबी, मराठी, गुजराती व तमिल भाषाओं में दैनिक फ़ीचर, लेख व रिपोर्टें भेजी जाने लगीं।

हमने अरबी भाषा में भी साप्ताहिक फ़ीचर सर्विस आरम्भ की। उसके लिये बहुत से अरब देशों के समाचार पत्रों और न्यूज़ एजेन्सियों से भागीदारी बनाई।

प्रेस एशिया इन्टरनेशनल फ़ीचर के सम्पादन की ज़िम्मेदारी सम्भालना मेरे लिए एक चुनौतीपूर्ण अनुभव था।

1971 में भारत-पाक युद्ध के दौरान रिपोर्टिंग करने वाली मैं पहली महिला पत्रकार थी। गोलाबारी और लाशों के साये में बिताये इस समय ने मेरे ज़ेहन से डर की भावना को पूरी तरह मिटा दिया। साथ ही युद्ध की अनिवार्यता का प्रश्न भी मन को झकझोरने लगा। मैंने भारत जैसे विकासशील देश के अस्त्र-शस्त्र पर बढ़ते ख़र्च और युद्ध के सामाजिक, आर्थिक-राजनैतिक नुक्सानों पर लेख लिखने शुरू किये।

अब मैंने अपनी कलम को महिलाओं के सामाजिक दर्जे को उजागर करने के प्रयासों में लगाने का निश्चय किया है। मैं अपने परिवार की तीसरी बेटी थी जिसे मेरे मौसाजी ने "फालतू" का नाम दे दिया था। बेटियों के दुःखों का कलमबद्ध करके मैंने 'फालतू' पुस्तक की रचना की।

इसके अलावा मैंने अपने लेखों में महिलाओं के अधिकारों के विषय से सम्बन्धित ढेरों प्रश्नों पर लिखा। क्या हर महिला के जीवन का एकमात्र उद्देश्य विवाह ही है? अविवाहित माताओं का समाज में क्या स्थान है? पत्नी को पति को छोड़ने का कानूनी अधिकार क्यों नहीं है? कार्यशील हो जाने पर भी महिलाओं को समाज में बराबरी का स्थान क्यों नहीं मिलता? परिवार चलाने में गृहणियों के महत्वपूर्ण योगदान को कोई महत्व क्यों नहीं दिया जाता? उन्हें पारिवारिक सम्पति में बराबर का हक़ क्यों नहीं मिलता? विधवा हो जाने पर महिला का जीवन क्यों समाप्त हो जाता है? उसकी भावनाओं-इच्छाओं का सम्मान क्यों नहीं किया जाता?

इन तमाम प्रश्नों पर मैंने अनेक लेख, कहानियां और फ़ीचर लिखे हैं। मुझे उम्मीद है कि कहीं न कहीं इन विचारों का समाज की सोच पर प्रभाव पड़ता है। अगर अपनी कलम के माध्यम से मैं समाज के नज़रिये में कुछ बदलाव लाने में कामयाब हो पाती हूं तो मैं समझूंगी कि मेरा जीना सार्थक हो गया है।

***मनोरमाजी*** *दिल्ली में रहती हैं। आज भी वह अपने क्षेत्र के कार्यों में सक्रिय हिस्सा लेती हैं।*


## नया प्रकाशन

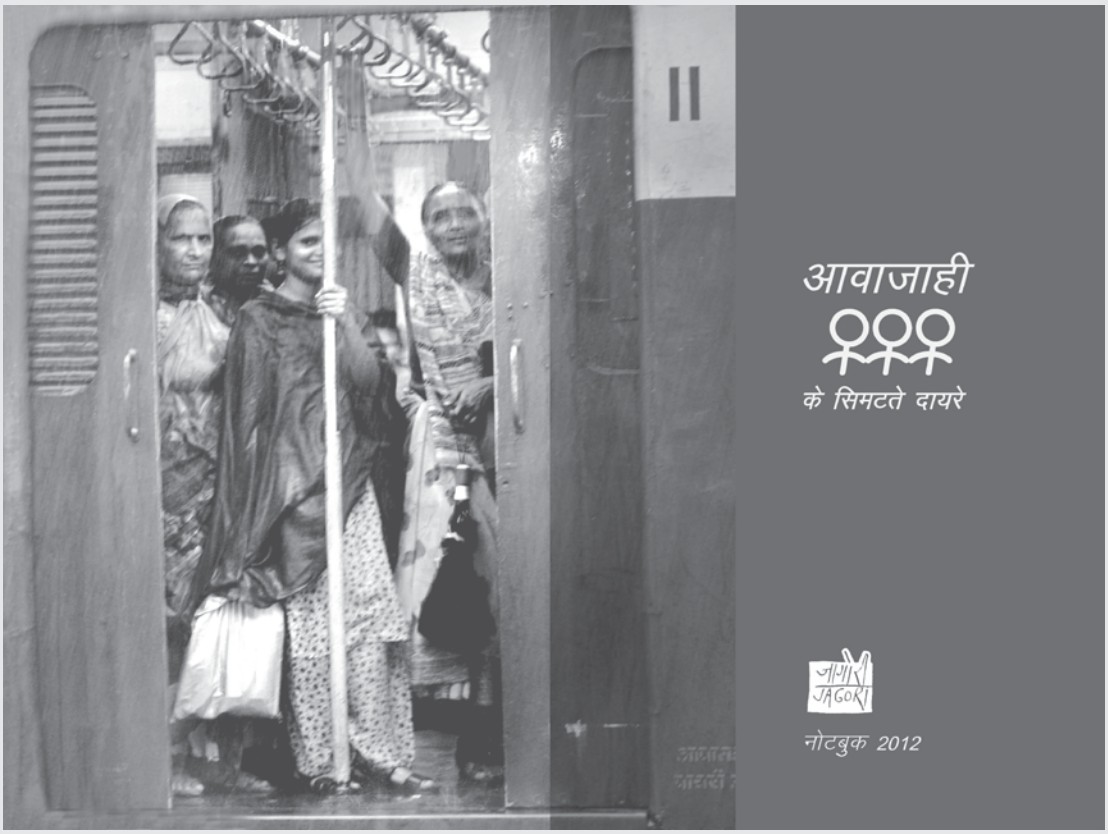


**प्रतियां मंगवाने के लिए संपर्क करें:**
**महावीर सिंह, जागोरी**
**फ़ोनः 011-26691219/20 • distribution@jagori.org**